CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

तुलसी रामायण कथा

राम जन्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुलसी-राम-कथा-१

राम-जन्म

म. सं. वि. वि.
वाल्मीकि विद्यापीठ

विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

तुलसीदासजी के 'रामचरित-मानस' के आधार पर भगवान् राम की सरल एवं रोचक कहानी

पुस्तक भेंट के निमित्त है

सत्साहित्य प्रकाशन
१९५६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९५६
मूल्य
[redacted] ४०न०पै०

मुद्रक
सुरेन्द्र प्रिंटर्स प्राइवेट लि०,
दिल्ली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशकीय

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने राम का नाम न सुना हो और राम-कथा से परिचित न हो। क्या अमीर, क्या गरीब; क्या छोटा, क्या बड़ा; क्या शहरी, क्या ग्रामीण; सभी राम का नाम सुनकर गद्‌गद् हो जाते हैं। उनके नाम में कुछ ऐसा जादू है कि एक बार सुनकर तृप्ति नहीं होती, बार-बार सुनने को जी चाहता है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि राम-कथा के मुख्य-मुख्य प्रसंग लेकर इस ढंग से प्रस्तुत करें कि सामान्य पढ़े-लिखे पाठक भी उन्हें आसानी से समझ सकें और उनमें रस ले सकें। इसी उद्देश्य को सामने रखकर इस पुस्तकमाला का श्रीगणेश किया जा रहा है। 'रामायण' में पूरी राम-कथा दी हुई है। उसीमें से क्रम-बद्ध घटनाएं लेकर ये पुस्तकें तैयार की गई हैं। पाठकों के लाभ और विषय की रोचकता की दृष्टि से बीच-बीच में कुछ चौपाइयां-दोहे भी डाल दिये गए हैं।

हमें विश्वास है कि यह माला पाठकों को पसंद आयगी और वे इसको घर-घर पहुँचाने में मदद देंगे।

प्रत्येक पुस्तक में कुछ चित्र भी दिये गए हैं।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय-सूची

१.	जन्म	५
२.	नामकरण	१२
३.	बाल-लीला	१५
४.	विद्याभ्यास	१८
५.	विश्वामित्र की मांग	२१
६.	यज्ञ-रक्षा	२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रामजन्म

: १ :

जन्म

हमारे देश में राम का नाम घर-घर लिया जाता है। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो इस नाम से परिचित न हो। यह शब्द कानों में पड़ते ही मन में भक्ति और प्रेम की लहर दौड़ने लगती है। बहुत-से लोग राम को भगवान का एक नाम मानते हैं। लेकिन बहुत-से यह भी मानते हैं कि भगवान ने पृथ्वी का बोझ हलका करने के लिए मनुष्य के रूप में जन्म लिया था और अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राजा राम वही भगवान थे।

त्रेतायुग की बात है। राजा दशरथ अयोध्यापुरी में राज करते थे। कहते हैं, पहले जन्म में उन्होंने बहुत तपस्या की थी। तब भगवान ने प्रसन्न होकर उन्हें वर दिया था कि अगले जन्म में वह स्वयं उनके घर पुत्र-रूप में जन्म लेंगे। इसलिए इस जन्म में भगवान के लिए राजा दशरथ के मन में बड़ा प्रेम था। वह बड़े गुणवान और वीर पुरुष थे। वह दस महारथियों से एक-साथ युद्ध कर सकते थे। इसीलिए उनका नाम दशरथ पड़ गया था। उनकी तीन रानियां थीं—कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीनों बड़ी सुशील, सुन्दर और आचारवान थीं। वे अपने पति से बहुत प्रेम करती थीं। भगवान के चरणों में भी उनका बड़ा प्रेम था। उन्हें सब सुख प्राप्त था; पर उनके कोई पुत्र न था। वंश कैसे चलेगा, यह सोच-सोचकर राजा बहुत दुखी रहते थे। जब वह बूढ़े हो चले तब उनका यह दुःख बहुत ही बढ़ गया। आखिर एक दिन अपनी यह चिन्ता लेकर वह गुरु वशिष्ठ के पास पहुँचे।

गुरु वशिष्ठ सबकुछ जानते थे। उन्होंने राजा को विश्वास दिलाया कि उनके पुत्र अवश्य पैदा होगा; उन्हें दुखी नहीं होना चाहिए। वह पुत्र तीनों लोकों में प्रसिद्ध होगा। अपने पराक्रम से वह धरती का भार हल्का करेगा। इस प्रकार राजा को समझा-बुझाकर उन्होंने शृंगी ऋषि को बुलवाया। उन्होंने आकर राजा के लिए एक यज्ञ किया। इस यज्ञ को पुत्रेष्टियज्ञ कहते हैं। इस यज्ञ के बाद राजा के घर में चार पुत्र हुए। सबसे पहले जिस पुत्र का जन्म हुआ वह राम के नाम से प्रसिद्ध हुए। वह देवी कौशल्या के पुत्र थे। जिस दिन उनका जन्म हुआ उस दिन चैत्र मास की नौमी थी। शुक्ल-पक्ष था, दोपहर का समय। न बहुत सरदी थी, न बहुत गरमी। हल्की-हल्की ठंडी हवा चल रही थी। देवता हर्ष मना रहे थे। सन्त जनों के हृदय में बड़ा उत्साह पैदा हो रहा था।

नवमी तिथि मधुमास पुनीता,
सुकल पच्छ अभिजित हरि प्रीता।
मध्य दिवस अति सीत न घामा,
पावन काल लोक-विस्रामा॥
सीतल मन्द सुरभि बह बाऊ,
हरषित सुर सन्तन मन चाऊ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस मंगलमय अवसर पर सारे देवता अपने-अपने विमानों को सजाकर आकाश में आ पहुँचे और पृथ्वी पर फूल बरसाने

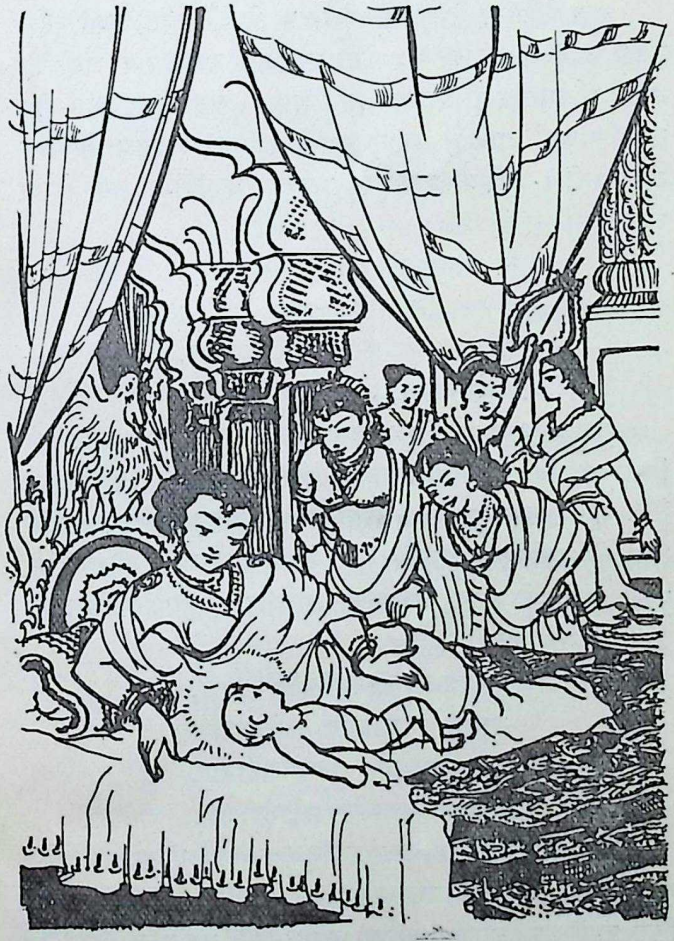

रामजन्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लगे। दुंदुभी बजने लगी। मुनि लोग स्तुति करने लगे। तीनों लोकों में आनन्द छा गया।

राम के जन्म से माता कौशल्या को भी बहुत खुशी हुई। उनके हृदय में आनन्द भर उठा और वही क्यों, सारी अयोध्या नगरी में आनन्द-ही-आनन्द उमड़ आया। बच्चे का रोना और उसकी प्यारी आवाज सुनकर सारी रानियां कौशल्या के पास आ पहुँचीं। दासियां खुश होकर इधर-उधर दौड़ने लगीं। सब लोग पुलकित हो उठे।

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी,
संभ्रम चलि आईं सब रानी।
हरषित जहं तहं धाईं दासी,
आनन्द मगन सकल पुरवासी॥

पुत्र-जन्म का यह शुभ समाचार जब राजा दशरथ को मिला तब उनको जो प्रसन्नता हुई उसका वर्णन कौन कर सकता है! उन्हें इतना सुख मिला जितना किसीको ब्रह्म के आनन्द में लीन हो जानेपर मिलता है। मन में प्रेम उमड़ आया और शरीर पुलकायमान हो उठा। वह इतने आत्मविभोर हो गए कि उनसे उठा भी नहीं गया।

दसरथ पुत्रजनम सुनि काना,
मानहुं ब्रह्मानन्द समाना।
परम प्रेम मन पुलक सरीरा,
चाहत उठन करत मति धीरा॥

यह ठीक ही था। अबतक वह पुत्र के लिए तरस रहे थे। बुढ़ापे में उन्हें पुत्र का मुख देखने को मिला था। उनके लिए इससे बढ़कर और क्या हो सकता था! वह सोचने लगे कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिस हरि का नाम सुनने से परम सुख मिलता है उन्हीं प्रभु ने आज स्वयं मेरे घर जन्म लिया है। उनके मन में यह निश्चय हो चुका था कि स्वयं भगवान ही अवतार लेकर उनके घर आए हैं। इसलिए उन्होंने बाजेवालों को बुलाकर आज्ञा दी कि बाजे बजाओ।

जाकर नाम सुनत सुभ होई,
मोरे गृह आवा प्रभु सोई।
परमानन्द पूरि मन राजा,
कहा बोलाइ बजाबहु बाजा॥

इसके बाद राजा दशरथ ने गुरु वशिष्ठ के पास समाचार भेजा। बहुत-से ब्राह्मणों को लेकर वह तुरन्त वहां आए। राजा ने ब्राह्मणों को बहुत-सा सोना, वस्त्र, मणियां और गउएं दान में दीं। उधर सब नर-नारी नगर को सजाने में जुट गए। देखते-देखते झंडे-झंडियों और बन्दनवारों से सारा नगर भर गया। इस समय की सजावट का वर्णन नहीं किया जा सकता। आकाश से फूलों की वर्षा हो रही थी। नगर-निवासी इतने मग्न थे मानो वे ब्रह्म को पा गए हों।

ध्वज पताक तोरन पुर छावा,
कहि न जाय जेहि भांति बनावा।
सुमन वृष्टि आकास तें होई,
ब्रह्मानन्द-मगन सब कोई॥

नगर की महिलाओं के प्रेम का तो कहना ही क्या था! झुँड बनाकर वे महलों की ओर चलीं। वे इतनी जल्दी में थीं कि नए वस्त्र और आभूषण पहनना भी भूल गईं। जैसी बैठी थीं वैसी ही उठकर दौड़ पड़ीं। किसी प्रकार का कोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बनाव-शृंगार नहीं किया। सोने के कलश हाथ में लेकर और मंगल द्रव्यों से थाल भरकर वे तुरन्त राजा के द्वार पर जा पहुँचीं।

बृन्द बृन्द मिलि चलीं लोगाईं,
सहज सिंगार किए उठि धाईं।
कनक कलस मंगल भरि थारा,
गावत पैठहिं भूप-दुआरा॥

अन्दर जाकर उन्होंने बच्चे की आरती उतारी। उसके ऊपर अनेक प्रकार की वस्तुएँ वारने लगीं। वे बार-बार उसके चरण छूती थीं। वे उसे साधारण बालक नहीं मानती थीं, भगवान समझती थीं।

करि आरती निछावरि करहीं,
बार-बार सिसु चरनन्हि परहीं।

जब महलों में इस प्रकार आनन्द मनाया जा रहा था तभी उसके सामने गाने-बजानेवाले और रघुकुल की वंशावलि बखाननेवाले वहाँ इकट्ठे हो गए। वे रघुकुल के पावन चरित्र गाने लगे और अयोध्यावासियों ने अपना सबकुछ दान करना आरम्भ कर दिया। जिसके पास जो कुछ भी था वह उसीको दान करने लगा। ऐसे आनन्द के अवसर पर वे अपने पास कुछ भी नहीं रखना चाहते थे। नगर की सब गलियों में कस्तूरी, चन्दन और केसर की कीच-सी दिखाई देने लगी, क्योंकि नगर-वासियों ने गलियों में सुगन्ध फैलाने के लिए इन वस्तुओं का दिल खोलकर प्रयोग किया था।

सरबस दान दीन्ह सब काहू,
जेहि पावा राखा नहिं ताहू।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृग-मद-चन्दन कुंकुम कीचा,
मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा ॥

घर-घर में बधाई बजने लगी। क्यों न बजती ! उनके राजा के घर में शोभा के धाम भगवान राम जो पैदा हुए थे। इसलिए नगर के सभी नर और नारियां आनन्द में मग्न हो उठे थे। उनका वह आनन्द तब और भी बढ़ गया जब उन्हें पता लगा कि राजा की दूसरी दोनों रानियों के भी पुत्र पैदा हुए हैं।

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ।
सुन्दर सुत जन्मत भइं ओऊ ॥

इन दोनों रानियों का नाम कैकेयी और सुमित्रा था। उनके पुत्र भी कौशल्या के पुत्र के समान सुन्दर और सुख के देने वाले थे। सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया। इस प्रकार राजा के चार पुत्र हो गए। अवधपुरी में सब ओर शोभा-ही-शोभा दिखाई देने लगी। घरों में, राजमहलों में वेद-मन्त्र गूँजने लगे। इस प्रकार आनन्द-मंगल मनाने में एक महीना बात-की-बात में बीत गया। यह आनन्द-मंगल इतना कौतुक-पूर्ण था कि एक बार तो सूर्य भी रुककर उसे देखने लगा।

इस आनन्द के अवसर पर जो जिस प्रकार आया और जिसने जो भी चाहा, राजा दशरथ ने उसे वही दिया। हाथी, घोड़े, रथ, गउएँ, सोना, हीरे और नाना प्रकार के वस्त्र बांटे गए। सब सन्तुष्ट होकर असीस देने लगे कि राजा के सभी पुत्र चिरंजीवी हों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: २ :

नामकरण

आनन्द-उत्सव और दान-दक्षिणा करते हुए जब कुछ दिन बीत गए तो बालकों के नामकरण-संस्कार करने का प्रश्न उठा। राजा ने तुरन्त गुरु वशिष्ठ को सन्देशा भेजा, क्योंकि वही उनके कुल-गुरु थे। उनकी आज्ञा के बिना कोई भी मंगल-कार्य नहीं हो सकता था। सन्देशा पाकर वशिष्ठ महलों में आ पहुँचे। राजा ने उनका उचित आदर-सत्कार करके सबसे पहले उनकी पूजा की। फिर उनसे प्रार्थना की, "गुरुदेव अब आप इन बालकों के नाम रखिये।" गुरु वशिष्ठ बोले, "इनके तो बहुत अच्छे-अच्छे नाम हैं। अपनी बुद्धि के अनुसार उनमें से चुनकर मैं आपको बताता हूँ।" कौशल्या के पुत्र की ओर संकेत करके गुरुजी बोले, "यह जो बालक आनन्द और सुख का सागर है, तीनों लोकों में वास करनेवाला है। इस सुख के धाम बालक का नाम राम है। यह राम संसार भर को आनन्द और शान्ति का देनेवाला है।"

जो आनन्द सिन्धु सुखरासी,
सीकर तें त्रैलोक सुपासी।
सो सुखधाम राम अस नामा,
अखिल लोकदायक बिस्रामा॥

इसके पश्चात् वह कैकेयी के पुत्र की ओर मुड़कर बोले—

बिस्वभरन पोषन कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई॥

जो संसार का भरण-पोषण करनेवाला है, उसका नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भरत होना चाहिए।

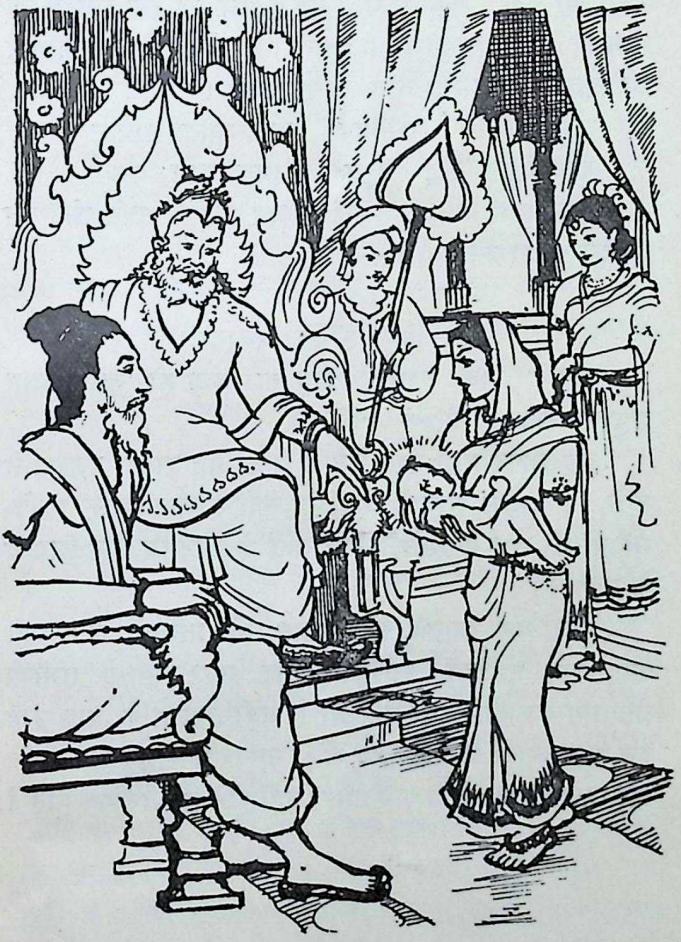

'इस सुख के धाम बालक का नाम राम है।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसके बाद उन्होंने सुमित्रा के दोनों पुत्रों की ओर संकेत करते हुए कहा, "यह जो बड़ा पुत्र है और जो सब लक्षणों का धाम है, जो राम का अत्यन्त प्यारा है और जो सारे संसार का सहारा है, उसका नाम लक्ष्मण होगा।

लच्छन धाम रामप्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बशिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥

तीनों पुत्रों के नाम रखने के बाद उन्होंने सबसे छोटे पुत्र की ओर देखा और बोले—

जाके सुमिरन तें रिपु-नासा।
नाम सत्रुहन बेद प्रकासा॥

जिसके याद करने से शत्रु का नाश हो उसका नाम शत्रुघ्न रखना ही उचित है।

इस प्रकार नाम रख लेने के बाद वह राजा दशरथ से बोले, "हे राजन्, तुम्हारे चारों पुत्र वेदों के जाननेवाले, ऋषि-मुनियों को सुख देनेवाले, भक्त जनों के आराध्य और शिवजी के प्राण हैं।"

राजा यह वचन सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए। वही क्या, सब रानियां, राजपुरुष और नगर-निवासी सभीकी प्रसन्नता का कोई अन्त नहीं था। बड़ी तपस्या के बाद उन्हें इन राजकुमारों के दर्शन हुए थे। उसपर ये राजकुमार इतने प्रतिभाशाली थे, सो वे अब प्रसन्न नहीं होते तो और कब होते!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: ३ :

बाल-लीला

इस प्रकार राजा के चारों पुत्र धीरे-धीरे बड़े होने लगे। इन चारों का आपस में बड़ा प्यार था, परन्तु फिर भी लक्ष्मण अधिकतर राम के साथ रहते थे। राम को ही उन्होंने अपना परम हितैषी और स्वामी समझ लिया था। यों तो वह सबसे प्रेम करते, पर उनकी सबसे अधिक प्रीति रामचन्द्र में ही थी। इसी प्रकार उनके छोटे भाई शत्रुघ्न कैकेयी के पुत्र भरत को सबसे अधिक प्रेम करते थे और उनको अपना स्वामी मानते थे।

बारेहि तें निज हित पति जानी।
लछिमन राम चरन रति मानी॥
भरत सत्रुहन दूनौ भाई।
प्रभुसेवक जसि प्रीति बड़ाई॥

राम श्यामल रंग के थे और लक्ष्मण का रंग गोरा था। इन दोनों की जोड़ी बहुत सुन्दर लगती थी। माताएं उन्हें देखतीं, बार-बार देखतीं। मन में बहुत प्रसन्न होतीं और तिनके तोड़ने लगतीं कि कहीं इनको नजर न लग जाय। वैसे तो वे चारों पुत्र रूप, शील और गुण की खान थे, परन्तु उनमें भी राम सबसे अधिक सुन्दर, शीलवान और गुणवान थे। उनका हृदय चन्द्रमा के समान प्रकाशमान था। नीले कमल के समान उनका मुख हमेशा खुला रहता था। जब वह हँसते थे तो मन मोहनेवाली किरणें फूटने लगती थीं। माता कभी उन्हें गोद में उठा लेती और कभी पालने में लिटाकर झुलाने लगतीं। वह उनको तरह-तरह से सजाती थीं। उनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हाथ-पैरों में नाना भांति के सोने के आभूषण पहनाती थीं। उनके वस्त्र बहुत ही मूल्यवान और सुन्दर थे।

जिस प्रकार राम का शृंगार और लाड़-प्यार होता था, उसी प्रकार दूसरी माताएँ अपने पुत्रों का लाड़-प्यार करती थीं। नाना प्रकार से उन्हें सजाती और उनको देख-देखकर आनन्द में मग्न हो उठती थीं।

इस प्रकार जब उन चारों भाइयों को देख-देखकर माताएँ सुख पा रही थीं तब एक बार राम ने अपनी माता कौशल्या को खेल-खेल में अपना विराट रूप दिखा दिया। माता भय-भीत हो उठीं। यह देखकर राम तुरन्त ही फिर अपने बालक रूप में आ गए। लेकिन कौशल्या तो राम के उस रूप को देख चुकी थीं। वह उनकी विनती करने लगीं, "हे प्रभु, बार-बार मैं आपसे यह विनती करती हूँ कि आपकी इस तरह की माया का मुझे फिर कभी दर्शन न हो।"

बार बार कौसल्या बिनय करइ कर जोरि।
अब जनि कबहूँ ब्यापई प्रभु मोहि माया तोरि॥

इसी प्रकार समय बीतता गया और वे चारों भाई बड़े होते गए। उन्हींके साथ-साथ कुटुम्बी-जनों का सुख भी बढ़ता गया। इन्हीं दिनों गुरु वशिष्ठ ने उनका चूड़ाकर्म संस्कार कराया और राजा ने ब्राह्मणों को बुलाकर बहुत-सी दक्षिणा दी।

राजा दशरथ अपने इन पुत्रों को देखते और अपने भाग्य को सराहते। अब वे बड़े हो गए थे और खेलने के लिए बाहर चले जाते थे। राजा जब भोजन करने के लिए महलों में आते तो वे अपने पुत्रों को अपने पास बुलाते, परन्तु उनको तो अपने साथियों के साथ खेलना ही अधिक अच्छा लगता था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसलिए वे अपने बालक-समाज को छोड़कर राजा के बुलाने पर कभी नहीं आते थे। तब राजा उनकी माताओं से कहते। माताएँ अपने पुत्रों को तरह-तरह से रिझाकर राजा के पास लेकर आतीं।

कोसल्या जब बोलन जाई,
ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई।

... ...

धूसर धूरि भरे तनु आये,
भूपति विहँसि गोद बैठाये।

कौशल्या जब राम को बुलाने जाती हैं तो राम साधारण बालकों के समान ठुमक-ठुमककर दूर भाग जाते हैं। माता बड़ा प्रयत्न करने पर उन्हें पकड़ पातीं और राजा के पास ले जातीं। उनका सारा शरीर धूल से भरा हुआ होता था, परन्तु भला माँ-बाप इन बातों की चिन्ता कब करते हैं! राजा दशरथ भी हँस पड़ते और बड़े प्रेम से उनको अपनी गोदी में बैठा लेते।

भोजन करत चपल चित, इत उत अवसरु पाइ।
भाजि चले किलकात मुख, दधि-ओदन लिपटाइ॥

राम गोदी में तो बैठ जाते, परन्तु वह शान्ति से भोजन नहीं करते थे। बड़े चंचल थे, जरा भी अवसर पाते तो गोदी से निकल भागते और किलकारी मारते। फिर पकड़े जाते और राजा उनको खिलाते तो उनके मुख पर दही और भात लग जाता। इसी तरह राम और उनके भाई हँसते-खेलते बहुत सुन्दर लगते थे और अपने माता-पिता को बहुत सुख देते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: ४ :

विद्याभ्यास

जब वे और बड़े हुए तो नियमानुसार उनका यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। उसके बाद वे विद्या पढ़ने के लिए गुरु वशिष्ठ के आश्रम में जाकर रहने लगे।

गुरुगृह गए पढ़न रघुराई।
अलप काल विद्या सब पाई॥

थोड़े समय में ही उन्होंने सब विद्याएं पढ़ लीं। जिनको चारों वेद स्मरण हैं, जिनके सांस में वेद का ज्ञान बस रहा है, वे राम गुरु के आश्रम में पढ़ने के लिए गए! यह बड़ा अद्‌भुत-सा लगता है, परन्तु उन्होंने तो मनुष्य का रूप धारण किया था, इसलिए वह सब काम मनुष्य के समान ही करते थे। देखते-देखते विद्या, विनय, गुण और शील में वे चारों भाई निपुण हो गए। वे राजाओं के समान खेले जानेवाले सब खेलों का भी खेलना सीख गए। हाथों में धनुष और बाण लिये वे बड़े शोभायमान लगते थे। उनके इस रूप को देखकर संसार के सब चर और अचर प्राणी मोहित हो जाते थे। जिस मार्ग से होकर वे जाते, जिन गलियों में वे प्रवेश करते वहांपर जो भी स्त्री-पुरुष खड़े होते वे उनको देखकर ठिठक जाते। उनके मन में प्रेम उमड़ पड़ता और वे उनको देख-देख कभी नहीं अघाते थे।

अयोध्या में जितने भी नर-नारी, बूढ़े और बालक थे उन सबको रामचन्द्र प्राणों से भी अधिक प्यारे लगते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्या बिनय निपुन गुनसीला ।
खेलहिं खेल सकल नृपलीला ।।
करतल बान धनुष अति सोहा ।
देखत रूप चराचर मोहा ।।
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई ।
थकित होहिं सब लोग लुगाई ।।
कोसलपुरबासी नर नारि बृद्ध अरु बाल ।
प्रानहुं तें प्रिय लागहिं सब कहँ रामकृपाल ।।

जब राम और उनके दूसरे भाई जंगल में जाते थे तो वे अपने मित्रों को भी बुला लेते थे । जिस तरह से भी अयोध्या-पुरी के नर-नारी प्रसन्न हों और उन्हें आनन्द मिले ऐसे ही काम राम सदा करते थे ।

जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा ।
करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा ।।

भगवान राम अकेले भोजन नहीं करते थे ! अपने छोटे भाइयों और सखाओं को भी साथ ले लेते थे । इससे सामूहिक भोजन का आनन्द मिल जाता था ।

राम अपने माता-पिता की आज्ञा के अनुसार ही सब काम करते थे ।

अनुज सखा संग भोजन करहीं ।
मातु पिता आग्या अनुसरहीं ।।

राम वेद और पुराणों को मन लगाकर सुनते और उनको अच्छी तरह समझकर फिर छोटे भाइयों को समझाते । सवेरे उठते ही वे माता, पिता और गुरु के चरणों में प्रणाम करते । उनसे आज्ञा लेकर घर का काम-काज करते । उनका इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकार का व्यवहार देखकर राजा मन-ही-मन बहुत प्रसन्न होते थे।

वेद पुरान सुनहिं मन लाई।
आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई॥
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा॥
आयसु मांगि करहिं पुरकाजा।
देखि चरित हरषै मन राजा॥

जो भगवान सब जगह रहनेवाले हैं, जिनकी बुद्धि की कोई थाह नहीं, जो इच्छारहित हैं, जो कभी जन्म नहीं लेते, जो निर्गुण हैं, जिनका न कोई रूप है और न कोई नाम है, वे ही अपने भक्तों की भलाई के लिए तरह-तरह के चरित्र किया करते और उनको देख-देखकर राजा दशरथ और उनका परिवार सुख पाता था। उन चारों भाइयों की माताओं के हर्ष का तो कहना ही क्या ! ऐसे सुन्दर, सुशील और गुणवान पुत्र पाकर वे सदा अपने भाग्य को सराहती रहती थीं। सच तो यह है कि सारी अयोध्या नगरी चारों भाइयों का दर्शन करके आनन्द में मग्न हो उठी थी, विशेषकर राम तो उस नगरी के लिए परम शोभा के धाम बन गए थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: ५ :

विश्वामित्र की मांग

राम के समय में विश्वामित्र बहुत ही तेजस्वी महात्मा हुए हैं। वह जन्म से क्षत्रिय थे, परन्तु घोर तप करने के बाद उन्होंने महामुनि का पद पाया था। जिस समय महाराज दशरथ के चारों पुत्र किशोर हुए उस समय महामुनि विश्वामित्र एक महायज्ञ करने में लगे हुए थे। लेकिन राक्षस-जाति के लोग उनकी तपस्या में बाधा डाला करते थे और उनका यज्ञ बिगाड़ देते थे। यही नहीं, जहाँ-जहाँ मुनि लोग जप, यज्ञ आदि आरम्भ करते थे, वहीं ये राक्षस लोग पहुँच जाते थे। विशेष-कर मारीच और सुबाहु नाम के राक्षसों से विश्वामित्र बहुत भय खाते थे। वे लोग बहुत उपद्रव करते और उनको बेहद दुख पहुँचाते थे।

जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं।
अति मारीच सुबाहुहि डरहीं॥
देखत जग्य निसाचर धावहिं।
करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं॥

इससे महामुनि विश्वामित्र के मन में चिन्ता पैदा हो गई। सोचने लगे, इन राक्षसों का कैसे नाश किया जाय। तभी उनके मन में एक विचार आया कि महाराज दशरथ के पुत्र राम ही इनका नाश कर सकते हैं। राम साधारण मानव नहीं हैं। स्वयं भगवान ने पृथ्वी का भार उतारने के लिए राम-रूप में जन्म लिया है। चलो, इस बहाने मैं भी उनके दर्शन कर लूंगा! महाराज दशरथ से विनती करके राम और लक्ष्मण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोनों भाइयों को यहाँ ले आऊँगा। वे प्रभु तो ज्ञान, वैराग्य आदि सारे गुणों के धाम हैं। मैं अच्छी प्रकार जी भरकर उनके दर्शन करूँगा।

एहू मिस देखउँ पद जाई।
करि बिनती आनउँ दोउ भाई॥
ग्यान बिराग सकल गुन अयना।
सो प्रभु मैं देखब भरि नयना॥

इस प्रकार निश्चय करके वह अयोध्यापुरी की ओर चल पड़े। शीघ्र ही वे सरयू नदी के किनारे पहुँच गए। वहां उन्होंने स्नान किया और फिर राजमहल की ओर चल दिए। उसी समय महाराज दशरथ को उनके आने का समाचार मिला। वह तुरन्त ब्राह्मणों की मंडली लेकर उनसे मिलने के लिए आगे आए। दण्डवत-प्रणाम करके उनका उचित सम्मान किया और अन्दर ले जाकर उन्हें एक ऊँचे आसन पर बैठाया। यहां फिर नाना प्रकार से उनकी पूजा की। बोले, "आज मेरे समान दूसरा कौन भाग्यवान होगा!"

इस प्रकार सम्मान पाकर विश्वामित्र मन में बहुत प्रसन्न हुए। इसी समय महाराज दशरथ ने अपने चारों पुत्रों को बुलाया और उनके चरणों में झुका दिया। चारों भाइयों ने विनयपूर्वक उन्हें प्रणाम किया। रामचन्द्रजी को देखकर तो महामुनि विश्वामित्र अपनी सुध-बुध भूल गए। उनके मुख की अपार शोभा ने उन्हें मुग्ध कर दिया। वह इस प्रकार मग्न हो गए जिस प्रकार चकोर पूर्ण चन्द्र को देखकर लुभायमान हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चारों पुत्रों को देखकर विश्वामित्र बहुत प्रसन्न हुए

पुनि चरनन्हि मेले सुत चारी ।
राम देखि मुनि देह बिसारी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भए मगन देखत मुख-सोभा ।
जनु चकोर पूरन ससि लोभा ।।

इस प्रकार आदर-सत्कार करने के बाद महाराज दशरथ ने पूछा, "मुनिराज! आपने आज मेरे घर पधारने की जो कृपा की है, उसके लिए मैं सदा आभारी रहूँगा। आपने ऐसी कृपा पहले क्यों नहीं की। बताइए, आपका आगमन किसलिए हुआ है? आपकी आज्ञा का पालन करने में मैं तनिक भी देर नहीं लगाऊँगा।"

तब मन हरषि बचन कह राऊ ।
मुनि अस कृपा न कीन्हेहु काऊ ।।
केहि कारन आगमन तुम्हारा ।
कहहु सो करत न लावौं बारा ।।

राजा के इस प्रकार प्रेमभरे वचन सुनकर महामुनि बोले, "राजन्! ये राक्षस-जाति के लोग मुझे बहुत कष्ट पहुँचाते हैं। मैं आपसे एक भीख मांगने के लिए आया हूँ। मुझे आप छोटे भाई लक्ष्मण सहित रामचन्द्रजी को दे दीजिए। वे उन राक्षसों को मार डालेंगे और इस प्रकार मेरी रक्षा हो जायगी। राजन्, मन में दुखी मत होना, प्रसन्न होकर इन दोनों भाइयों को मुझे दे दो। ममता और अज्ञान को त्याग दो। ऐसा करने से तुमको धर्म और यश दोनों मिलेंगे, तुम्हारा परम कल्याण होगा।"

असुर समूह सतावहिं मोही ।
मैं जाचन आयेउँ नृप तोही ।।
अनुजसमेत देहु रघुनाथा ।
निसिचर बध मैं होब सनाथा ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देहु भूप मन हरषित, तजहु मोह अज्ञान।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौ इन्ह कहँ अति कल्यान ॥

महाराज ने जब यह अप्रिय बात सुनी तो बहुत दुखी हुए। उनका मुख कुम्हला गया। हृदय कांपने लगा। सोचने लगे—इस बुढ़ापे में तो मुझे ये पुत्र प्राप्त हुए हैं। इन्हींको मुनि महाराज ले जाना चाहते हैं। नहीं, इन्होंने यह बात सोचकर नहीं कही है। वह बोले, "हे महामुनि, आप धरती, गऊ, धन, सबकुछ मांग लीजिए, मैं खुशी-खुशी अपना सबकुछ दे दूँगा। शरीर और प्राण से अधिक प्यारा कुछ भी नहीं होता, वह भी मैं दे दूँगा। एक क्षण की भी देर नहीं लगाऊंगा।"

सुनि राजा अति अप्रिय बानी।
हृदय कंप मुख-दुति कुम्हिलानी ॥
चौथेपन पायउँ सुत चारी।
बिप्र बचन नहीं कहेहु बिचारी ॥
मांगहु भूमि धेनु धन कोसा।
सरबस देउँ आजु सह रोसा ॥
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहिं।
सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं ॥

"सब पुत्र मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं, लेकिन राम को तो मैं किसी प्रकार भी नहीं दे सकता। मुनिराज, सोचिए तो सही, कहां तो वे महा-भयंकर और कठोर राक्षस और कहां ये सुन्दर और किशोर अवस्थावाले बालक !"

सब सुत प्रिय मोहिं प्रान की नाईं।
राम देत नहिं बनइ गोसाईं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहँ निसिचर अति घोर कठोरा ।
कहँ सुन्दर सुत परम किसोरा ।।

इस प्रकार महाराज दशरथ उनसे निवेदन कर रहे थे । वह अपने पुत्रों को देने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे । लेकिन विश्वामित्र भी अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को मांगने आए थे । जब उन्होंने देखा कि महाराज अपने पुत्रों को प्राणों से भी अधिक प्यार करते हैं तो उन्हें क्रोध नहीं आया बल्कि उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई । मानो राजा का पुत्रों पर इतना प्रेम देखकर उनके मन में भी कोमल भावना जाग उठी हो । परन्तु महाराज दशरथ के कुलगुरु वशिष्ठ सबकुछ देख रहे थे और सबकुछ समझ भी रहे थे । वह समझ रहे थे कि राम और लक्ष्मण का महामुनि विश्वामित्र के साथ जाना उचित है। इसलिए वह महाराज दशरथ को नाना प्रकार से समझाने लगे । उनके इस प्रकार समझाने से तनिक-सी देर में ही राजा के सब सन्देह दूर हो गए :

तब बशिष्ठ बहु बिधि समुझावा ।
नृप-संदेह - नास कहँ पावा ।।

अब तो महाराज दशरथ ने बड़े आदर के साथ अपने दोनों पुत्रों को बुलाया । जब वे आगए तो प्रेम में भरकर उनको अपने हृदय से लगा लिया और नाना प्रकार से उनको सीख देने लगे । मुनि विश्वामित्र से बोले, "हे महामुनि, ये दोनों पुत्र मेरे प्राणों के समान हैं। अब आप ही इनके पिता हैं और कोई दूसरा कुछ नहीं ।"

अति आदर दोउ तनय बोलाये ।
हृदय लाइ बहुभाँति सिखाये ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेरे प्राननाथ सुत दोऊ ।
तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ।।

इस प्रकार महाराज दशरथ ने अपने पुत्रों को महामुनि विश्वामित्र को सौंप दिया। दोनों भाई वहां से अपनी माताओं के पास गए और उनको प्रणाम करके तथा उनका आशीर्वाद लेकर वे मुनि विश्वामित्र के पास लौट आए। वे दोनों भाई, जो पुरुषों में सिंह समान थे, मन-ही-मन प्रसन्न होते हुए मुनि के साथ उनके कष्ट दूर करने के लिए चल दिए। राम-कृपा के सागर हैं, धैर्यवान हैं, सारे संसार का कष्ट दूर करने-वाले हैं। उनके नेत्र लाल रंग के हैं। उनकी छाती चौड़ी है। भुजाएं विशाल हैं। नील कमल और तमाल वृक्ष के समान उनका शरीर श्याम है। वह पीताम्बर पहने हुए हैं। कमर पर तरकस कसा है। दोनों हाथों में धनुष-बाण हैं।

राजा दशरथ ने अपने पुत्रों को मुनि विश्वामित्र को सौंप दिया।

पुरुषसिंह दोउ बीर, हरषि चले मुनि-भयहरन ।
कृपासिन्धु मति धीर, अखिल-बिस्व-कारनकरन ।।
अरुन नयन उर-बाहु बिसाला ।
नील जलज तनु स्याम तमाला ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताड़का-वध

पृष्ठ ३० देखिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कटि पट पीत कसे वर माथा ।
रुचिर चाप सायक दुहुं हाथा ।।

विश्वामित्र मुनि ने श्याम और गोरे वर्ण दोनों भाई, श्री रामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी को पा लिया । उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों उन्हें कोई महान निधि मिल गई हो ।

स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ।
बिस्वामित्र महानिधि पाई ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: ६ :

यज्ञ-रक्षा

इस प्रकार महामुनि विश्वामित्र ने दोनों भाइयों को लेकर अपने आश्रम की ओर प्रस्थान किया। जैसे ही उन्होंने वन में प्रवेश किया ताड़का नाम की राक्षसी को उनके आने का समाचार मिल गया। क्रोध में भर-कर वह उनपर चढ़ दौड़ी। परन्तु राम क्या किसीसे डरनेवाले थे? उन्होंने एक ही बाण में उसको मार डाला। लेकिन वह एक दीन स्त्री थी, राम को उसपर दया आगई और उन्होंने उसको अपना पद प्रदान किया, अर्थात् उसको पापों से मुक्ति दे दी।

चले जात मुनि दीन्हि देखाई।
सुनि ताड़का क्रोध करि धाई॥
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा।
दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥

राम की यह वीरता देखकर महामुनि विश्वामित्र उनसे बड़े प्रभावित हुए। वह यह जानते थे कि राम भगवान हैं और उन्हें सब विद्याएँ प्राप्त हैं। फिर भी उन्होंने उन्हें कुछ और विद्याएँ सिखाईं, जिससे उन्हें भूख और प्यास न लगे और उनके शरीर में अपार बल तथा तेज बना रहे। उन्होंने राम और लक्ष्मण को अपने सारे अस्त्र-शास्त्र भी सौंप दिए। इसके पश्चात् वह उनको अपने आश्रम में ले गए। बड़े प्रेम से उनको भोजन कराया। रात्रि को विश्राम करने के बाद सवेरा होते ही राम ने महामुनि विश्वामित्र से कहा, "हे मुनिराज, अब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें। निर्भय और निःशंक होकर यज्ञ करें।"

प्रात कहा मुनि सन रघुराई।
निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई॥

राम की ये बातें सुनकर विश्वामित्र दूसरे ऋषियों के साथ निर्भय होकर यज्ञ करने लगे। दोनों भाई उनके यज्ञ के रक्षक बन गए।

जिस समय मारीच को यह समाचार मिला और उसने यज्ञ करने का शब्द सुना तो वह अपने बहुत-से सहायकों को लेकर वहां आ पहुँचा। राम और लक्ष्मण तो तैयार खड़े ही थे। राम ने तुरन्त बिना फलकेवाला एक बाण मारीच के मारा। उसके लगते ही मारीच सौ योजन दूर समुद्र पार जा गिरा।

। दोनों भाई उनके यज्ञ के रक्षक बन गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुनि मारीच निसाचर कोही ।
लेइ सहाय धावा मुनि-द्रोही ॥
बिनु फर बान राम तेहि मारा ।
सत जोजन गा सागर पारा ॥

इसके बाद राम ने सुबाहु को अग्निबाण मारा। वह तुरन्त मर गया। फिर लक्ष्मण ने देखते-ही-देखते दूसरे राक्षसों को समाप्त कर डाला। इस प्रकार इन दोनों भाइयों ने राक्षसों का नाश करके ब्राह्मणों को निर्भय कर दिया। देवता और मुनि सब उनकी स्तुति करने लगे। महामुनि विश्वामित्र के हर्ष का तो कहना ही क्या था ! मारीच और सुबाहु ये दोनों ही उनके यज्ञ में विघ्न डाला करते थे और उनको सताया करते थे। उन सबका अब नाश हो गया था। वे हर्ष से फूले न समाते तो क्या करते ?

दोनों भाई कुछ दिन उनके आश्रम में रहे। ब्राह्मण लोग उनको प्राचीन कथाएं सुनाया करते थे। यद्यपि राम से कुछ भी नहीं छिपा था फिर भी वे बड़े चाव से उनकी बातें सुनते और सबको प्रसन्न करते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुलसी-राम-कथा की पुस्तकें

१. राम-जन्म
२. धनुष-यज्ञ
३. राम-विवाह
४. राम-वनवास
५. केवट-मिलन
६. भरत-भेंट
७. पंचवटी में
८. सीता-हरण
९. सुग्रीव से मित्रता
१०. सीता की खोज

आदि-आदि

प्रत्येक का [redacted] ४०२०५०

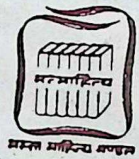

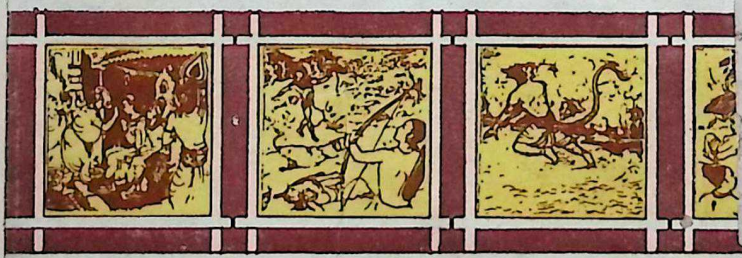

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu